बड़े घर की बेटी

–प्रेमचन्द

लेखक–परिचय

प्रेमचन्द का रचनाकाल 1901 से आरम्भ होता है। जब असहयोग आन्दोलन चल रहा था तब आप सब–डिप्टी इंस्पेक्टर थे। नौकरी छोड़कर साहित्य क्षेत्र में आए। प्रेमचन्द पहले उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से लिखते थे। सन् 1907 में इनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' उर्दू में प्रकाशित हुई। फिर हिन्दी से प्रभावित होकर हिन्दी में लिखने लगे। हिन्दी में इनकी पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' थी जो सन् 1916 में प्रकाशित हुई। आपका पहला उर्दू कहानी संग्रह 'सोजे वतन' व 'समर यात्रा' कहानी संग्रह को अंग्रेज सरकार ने जब्त किया व 'हंस' पत्रिका को बंद करने पर बाध्य कर दिया था।

अपनी रचनाओं में उन्होंने अपने युग के संघर्ष को उभारा है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण व किसानों के प्रभावशाली चित्र मिलते हैं। वे सुधारक और मानवता के उपासक थे। उनकी सभी कहानियाँ वातावरण प्रधान व चरित्र प्रधान हैं। प्रेमचन्द की रचनाओं का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है।

प्रेमचन्द प्रथम कथाकार थे जिन्होंने हिन्दी में जागरण और निर्माण की कहानियाँ लिखीं। आपकी रचनाओं पर हिन्दी में फिल्में भी बनीं। 'शतरंज के खिलाड़ी' काफी प्रसिद्ध हुई। आपने मर्यादा, माधुरी, हंस तथा जागरण का सम्पादन भी किया था।

सेवासदन, निर्मला, रंगभूमि, गबन, कायाकल्प, प्रेमाश्रम, गोदान आदि प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास हैं। लगभग 300 कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में संकलित हैं। पंच परमेश्वर, सप्तसरोज, प्रेम द्वादशी, प्रेम चतुर्थी, प्रेम पचीसी, सप्त सुमन आदि कई कहानी संग्रह प्रसिद्ध हुए। निबंध, नाटक व आलोचनाएँ भी लिखीं।

पाठ–परिचय

प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने बहू के कर्त्तव्य व उसकी जिम्मेदारियों के बारे में चर्चा की है। बेटी बड़े घर की हो या छोटे घर की। बहू बन कर जिस घर में जाती है उस घर को टूटने से बचाये रखने की जिम्मेदारी होती है उसकी। दो भाइयों में जरा सी बात पर झगड़ा हो गया। बड़ी भाभी का अपमान करने वाले छोटे भाई को बड़े भाई ने घर से निकल जाने को कह दिया। छोटे भाई ने भूल स्वीकार करते हुए क्षमा माँग ली। घर के बिखरने की स्थिति में भाभी के विवेकपूर्ण कदम से ही घर–परिवार बिखरने से बचा। लोगों को ताली बजाने का अवसर ही नहीं मिला।

बेनीमाधव सिंह गौरीपुर गाँव के जमींदार और नंबरदार थे। उनके पितामह किसी समय बड़े धन–धान्य संपन्न थे। गाँव का पक्का तालाब और मंदिर जिनकी अब मरम्मत भी मुश्किल थी, उन्हीं के कीर्ति–स्तंभ थे। कहते हैं, इस दरवाजे पर हाथी झूमता था, अब उसकी जगह एक बूढ़ी भैंस थी, जिसके शरीर में अस्थि–पंजर के सिवा और कुछ शेष न रहा था; पर दूध शायद बहुत देती थी; क्योंकि एक–न–एक आदमी हाँड़ी लिए उसके सिर पर सवार ही रहता था। बेनीमाधव सिंह अपनी आधी से अधिक–सम्पत्ति वकीलों को भेंट कर चुके थे उनकी वर्तमान आय एक हजार रुपये वार्षिक से अधिक न थी।

ठाकुर साहब के दो बेटे थे। बड़े का नाम श्रीकंठ सिंह था। उसने बहुत दिनों के परिश्रम और उद्योग के बाद बी.ए. की डिग्री प्राप्त की थी। अब एक दफ्तर में नौकर था। छोटा लड़का लालबिहारी सिंह दोहरे बदन का, सजीला जवान था। भरा हुआ मुखड़ा, चौड़ी छाती। भैंस का दो सेर ताजा दूध वह उठकर सबेरे पी जाता था। श्रीकंठ सिंह की दशा बिल्कुल विपरीत थी। इन नेत्रप्रिय गुणों को उन्होंने बी.ए.– इन्हीं दो अक्षरों पर न्योछावर कर दिया था। इन दो अक्षरों ने उनके शरीर को निर्बल और चेहरे को कांतिहीन बना दिया था। इसी से वैद्यक ग्रंथों पर उनका विशेष प्रेम था। आयुर्वेदिक औषधियों पर उनका अधिक विश्वास था। शाम–सबेरे से उनके कमरे से प्रायः खरल की सुरीली कर्णमधुर ध्वनि सुनाई दिया करती थी, लाहौर और कलकत्ते के वैद्यों से बड़ी लिखा–पढ़ी रहती थी।

श्रीकंठ इस अंग्रेजी डिग्री के अधिपति होने पर भी अंग्रेजी सामाजिक प्रथाओं के विशेष प्रेमी न थे; बल्कि वह बहुधा बड़े जोर से उसकी निंदा और तिरस्कार किया करते थे। इसी से गाँव में उनका बड़ा सम्मान था। दशहरे के दिनों में वह बड़े उत्साह से रामलीला में सम्मिलित होते और स्वयं किसी–न–किसी पात्र का पार्ट लेते थे। गौरीपुर में रामलीला के वही जन्मदाता थे। प्राचीन हिन्दू सभ्यता का गुणगान उनकी धार्मिकता का प्रधान अंग था। सम्मिलित कुटुंब के तो वह एक–मात्र उपासक थे। आजकल स्त्रियों को कुटुंब में मिल–जुलकर रहने की जो अरुचि होती है, उसे वह जाति और देश दोनों के लिए हानिकारक समझते थे। यही कारण था कि गाँव की ललनाएँ उनकी निंदक थीं। कोई–कोई तो उन्हें अपना शत्रु समझने में भी संकोच न करती थीं। स्वयं उनकी पत्नी को ही इस विषय में उनसे विरोध था। यह इसलिए नहीं कि उसे अपने सास–ससुर, देवर या जेठ आदि से घृणा थी; बल्कि उसका विचार था कि यदि बहुत सहने और तरह देने पर भी परिवार के साथ निर्वाह न हो सके, तो आए–दिन की कलह से जीवन को नष्ट करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि अपनी खिचड़ी अलग पकाई जाए।

आनंदी एक बड़े उच्च कुल की लड़की थी। उसके बाप एक छोटी–सी रियासत के ताल्लुकेदार थे। विशाल भवन, एक हाथी, तीन कुत्ते, बाज, बहरी शिकरे, झाड़–फानूस, ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी और ऋण, जो एक प्रतिष्ठित ताल्लुकेदार के भोग्य पदार्थ हैं, सभी यहाँ विद्यमान थे। नाम था भूपसिंह। बड़े उदार–चित्त और प्रतिभाशाली पुरुष थे; दुर्भाग्य से लड़का एक भी न था। सात लड़कियाँ हुईं और देवयोग से सब–की–सब जीवित रहीं। पहली उमंग में तो उन्होंने तीन ब्याह दिल खोलकर किए; पर पन्द्रह–बीस हजार रुपयों का कर्ज सिर पर हो गया, तो आँख खुली, हाथ समेट लिया। आनंदी चौथी लड़की थी। वह अपनी सब बहनों से अधिक रूपवती और गुणवती थी। इससे ठाकुर भूपसिंह उसे बहुत प्यार करते थे। सुंदर संतान को कदाचित उसके माता–पिता भी अधिक चाहते हैं। ठाकुर साहब बड़े धर्म–संकट में थे कि इसका विवाह कहाँ करें? न तो यही चाहते थे कि ऋण का बोझ बढ़े और न यही स्वीकार था

कि उसे अपने को भाग्यहीन समझना पड़े। एक दिन श्रीकंठ उनके पास किसी चंदे का रुपया माँगने आए। शायद नागरी–प्रचार का चंदा था। भूप सिंह उनके स्वभाव पर रीझ गए और धूमधाम से श्रीकंठ सिंह का आनंदी के साथ ब्याह हो गया।

आनंदी अपने नए घर में आई, तो यहाँ का रंग–ढंग कुछ और ही देखा। जिस टीम–टाम की उसे बचपन से ही आदत पड़ी हुई थी, वह यहाँ नाम–मात्र को भी न थी। हाथी–घोड़ों का तो कहना ही क्या, कोई सजी हुई सुंदर बहली तक न थी। रेशमी स्लीपर साथ लाई थी; पर यहाँ बाग कहाँ। मकान में खिड़कियाँ तक न थी, न जमीन पर फर्श, न दीवार पर तस्वीरें। यह एक सीधा–सादा देहाती गृहस्थ मकान था, किन्तु आनंदी ने थोड़ी ही दिनों में अपने को इस नई अवस्था के ऐसा अनुकूल बना लिया, मानो उसने विलास के सामान कभी देखे ही न थे।

(2)

एक दिन दोपहर के समय लालबिहारी सिंह दो चिड़िया लिए हुए आया और भावज से बोला– जल्दी से पका दो, मुझे भूख लगी है। आनंदी भोजन बनाकर उसकी राह देख रही थी। अब वह नया व्यंजन बनाने बैठी। हाँड़ी में देखा, तो घी पाव–भर से अधिक न था। बड़े घर की बेटी, किफायत क्या जाने। उसने सब घी मांस में डाल दिया। लालबिहारी खाने बैठा, तो दाल में घी न था, बोला–दाल में घी क्यों नहीं छोड़ा?

आनंदी ने कहा– घी सब माँस में पड़ गया। लालबिहारी जोर से बोला– अभी परसों घी आया है। इतनी जल्दी उठ गया ?

आनंदी ने उत्तर दिया– आज तो कुल पाव–भर रहा होगा। वह सब मैंने माँस में डाल दिया।

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी जल उठती है, उसी तरह से क्षुधा बावला मनुष्य जरा–जरा–सी बात पर तिनक जाता है। लालबिहारी को भावज की यह ढिठाई बहुत बुरी मालूम हुई, तिनककर बोला– मैके में तो चाहे घी की नदी बहती हो!

स्त्री गालियाँ सह लेती हैं, मार भी सह लेती हैं; पर मैके की निंदा उनसे नहीं सही जाती। आनंदी मुँह फेरकर बोली– हाथी मरा भी, तो नौ लाख का। वहाँ इतना घी नित्य लोग खा जाते हैं।

लालबिहारी को क्रोध आ गया, थाली उठाकर पलट दी, और बोला– जी चाहता है, जीभ पकड़कर खींच लूँ।

आनंदी को क्रोध आ गया। मुँह लाल हो गया, बोली– वह होते तो आज इसका मजा चखाते।

अब अपढ़, उजड्ड ठाकुर से न रहा गया। उसकी स्त्री एक साधारण जमींदार की बेटी थी। जब जी चाहता, उस पर हाथ साफ कर लिया करता था। खड़ाऊ उठाकर आनंदी की ओर जोर से फेंकी, और बोला– जिसके गुमान पर भूली हुई हो, उसे भी देखूंगा और तुम्हें भी।

आनंदी ने हाथ से खड़ाऊ रोकी, सिर बच गया; पर अंगुली में बड़ी चोट आई। क्रोध के मारे हवा से हिलते पत्ते की भाँति काँपती हुई अपने कमरे में आकर खड़ी हो गई। स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व का घमंड होता है। आनंदी खून का घूँट पीकर रह गई।

(3)

श्रीकंठ सिंह शनिवार को घर आया करते थे। बृहस्पति को यह घटना हुई थी। दो दिन तक आनंदी कोप–भवन में रही। न कुछ खाया न पिया, उनकी बाट देखती रही। अंत में शनिवार को वह नियमानुकूल संध्या–समय पर घर आए और बाहर बैठकर कुछ इधर–उधर की बातें करने लगे। यह

वार्तालाप दस बजे रात तक होता रहा। गाँव के भद्र पुरुषों को इन बातों में ऐसा आनंद मिलता था कि खाने–पीने की भी सुध न रहती थी। श्रीकंठ को पिंड छुड़ाना मुश्किल हो जाता था। ये दो–तीन घंटे आनंदी ने बड़े कष्ट से काटे! किसी तरह भोजन का समय आया। पंचायत उठी। एकांत हुआ, तो लालबिहारी ने कहा– भैया, आप जरा भाभी को समझा दीजिएगा कि मुँह सँभालकर बातचीत किया करें, नहीं तो एक दिन अनर्थ हो जाएगा।

बेनीमाधवसिंह ने बेटे की ओर साक्षी दी– हाँ, बहू–बेटियों का यह स्वभाव अच्छा नहीं कि मर्दों के मुँह लगे।

लालबिहारी– वह बड़े घर की बेटी है, तो हम भी कोई ऐसे–वैसे नहीं हैं।

श्रीकंठ ने चिंतित स्वर से पूछा– आखिर बात क्या हुई ?

लालबिहारी ने कहा– कुछ भी नहीं; यों ही आप–ही–आन उलझ पड़ी। मैके के सामने हम लोगों को कुछ समझती ही नहीं।

श्रीकंठ खा–पीकर आनंदी के पास गए। वह भरी बैठी थी। यह हजरत भी कुछ तीखे थे। आनंदी ने पूछा– चित्त तो प्रसन्न है?

श्रीकंठ बोले– बहुत प्रसन्न है; पर तुमने आजकल घर में यह क्या उपद्रव मचा रखा है ?

आनंदी की त्योरियों पर बल पड़ गए। झुँझलाहट के मारे बदन में यह ज्वाला सी दहक उठी। बोली–जिसने तुमसे यह आग लगाई है, उसे पाऊँ, मुँह झुलस दूँ।

श्रीकंठ– इतनी गरम क्यों होती हो, बात तो कहो।

आनंदी– क्या कहूँ, यह मेरे भाग्य का फेर है! नहीं तो गँवार छोकरा, जिसको चपरासीगिरी करने का भी शऊर नहीं, मुझे खड़ाऊ से मारकर यों न अकड़ता।

श्रीकंठ– सब हाल साफ–साफ कहो, तो मालूम हो। मुझे तो कुछ पता नहीं।

आनंदी– परसों तुम्हारे लाड़ले भाई ने मुझसे माँस पकाने को कहा। घी हांडी में पाव–भर से अधिक न था। वह सब मैंने माँस में डाल दिया। जब खाने बैठा तो कहने लगा– दाल में घी क्यों नहीं है? बस इसी पर मेरे मैके को बुरा–भला कहने लगा– मुझसे न रहा गया। मैंने कहा कि वहाँ इतना घी तो लोग खा जाते हैं? और किसी को जान भी नहीं पड़ता। बस इतनी–सी बात पर इस अन्यायी ने मुझ पर खड़ाऊ फेंक मारी। यदि हाथ से न रोक लूँ तो सिर फट जाए। उसी से पूछो, मैंने जो कुछ कहा है, वह सच है या झूठ।

श्रीकंठ की आँख लाल हो गई। बोले–यहाँ तक हो गया, इस छोकरे का यह साहस!

आनंदी स्त्रियों के स्वभावानुसार रोने लगी; क्योंकि आँसू उनकी पलकों पर रहते हैं। श्रीकंठ बड़े धैर्यवान और शांत पुरुष थे। उन्हें कदाचित् ही कभी क्रोध आता था; स्त्रियों के आँसू ; पुरुष की क्रोधाग्नि भड़काने में तेल का काम देते हैं। रात–भर करवटें बदलते रहे। उद्विग्नता के कारण पलक तक नहीं झपकी। प्रातःकाल अपने बाप के पास जाकर बोले– दादा, अब इस घर में मेरा निबाह न होगा।

इस तरह की विद्रोहपूर्ण बातें कहने पर श्रीकंठ ने कितनी ही बार अपने कई मित्रों को आड़े हाथों लिया था; परन्तु दुर्भाग्य, आज उन्हें स्वयं वे ही बातें अपने मुँह से कहनी पड़ीं। दूसरों को उपदेश देना भी कितना सहज है!

बेनीमाधव सिंह घबरा उठे और बोले–क्यों?

श्रीकंठ– इसलिए कि मुझे भी अपनी मान–प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। आपके घर में अब अन्याय और हठ का प्रकोप हो रहा है। जिनको बड़ों का आदर–सम्मान करना चाहिए, वे उनके सिर चढ़ते हैं।

मैं दूसरे का नौकर ठहरा घर पर रहता नहीं। यहाँ मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाऊ और जूतों की बौछारें होती हैं। कड़ी बात तक चिंता नहीं। कोई एक की दो कह ले, वहाँ तक मैं सह सकता हूँ किन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर लात–घूँसे पड़ें और मैं दम न मारूँ।

बेनीमाधवसिंह कुछ जवाब न दे सके। श्रीकंठ सदैव उनका आदर करते थे। उनके ऐसे तेवर देखकर बूढ़ा अवाक् रह गया। केवल इतना ही बोला–बेटा, तुम बुद्धिमान होकर ऐसी बातें करते हों ? स्त्रियाँ इस तरह घर का नाश कर देती हैं। उनको बहुत सिर चढ़ाना अच्छा नहीं।

श्रीकंठ– इतना मैं जानता हूँ, आपके आशीर्वाद से ऐसा मूर्ख नहीं हूँ। आप स्वयं जानते हैं कि मेरे ही समझाने–बुझाने से, इसी गाँव में कई घर सँभल गए, पर जिस स्त्री की मान–प्रतिष्ठा का ईश्वर के दरबार में उत्तरदाता हूँ, उसके प्रति ऐसा घोर अन्याय और पशुवत व्यवहार मुझे असह्य है। आप सच मानिए, मेरे लिये यही कुछ कम नहीं है कि लालबिहारी को कुछ दंड नहीं देता।

अब बेनीमाधव सिंह भी गरमाए। ऐसी बातें और न सुन सके। बोले– लालबिहारी तुम्हारा भाई है। उससे जब कभी भूल–चूक हो, उसके कान पकड़ो लेकिन .....

श्रीकंठ– लालबिहारी को मैं अब अपना भाई नहीं समझता।

बेनीमाधवसिंह– स्त्री के पीछे ?

श्रीकंठ– जी नहीं, उसकी क्रूरता और अविवेक के कारण।

दोनों कुछ देर चुप रहे। ठाकुर साहब लड़के का क्रोध शांत करना चाहते थे, लेकिन यह नहीं स्वीकार करना चाहते थे कि लालबिहारी ने कोई अनुचित काम किया है। इसी बीच में गाँव के और कई सज्जन हुक्के–चिलम* के बहाने वहाँ आ बैठे। कई स्त्रियों ने जब यह सुना कि श्रीकंठ पत्नी के पीछे पिता से लड़ने को तैयार हैं, तो उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। दोनों पक्षों की मधुर वाणियाँ सुनने के लिए उनकी आत्माएँ तिलमिलाने लगीं। गाँव में कुछ ऐसे कुटिल मनुष्य भी थे, जो इस कुल की नीतिपूर्ण गति पर मन–ही–मन जलते थे। वे कहा करते थे– श्रीकंठ अपने बाप से दबता है, इसलिए वह दब्बू है। उसने विद्या पढ़ी, इसलिए वह किताबों का कीड़ा है। बेनीमाधव सिंह उसकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते, यह उनकी मूर्खता है। इन महानुभावों को शुभकामनाएँ आज पूरी होती दिखाई दीं। कोई हुक्का पीने के बहाने और कोई लगान की रसीद दिखाने आकर बैठ गया। बेनीमाधव सिंह पुराने आदमी थे। इन भावों को ताड़ गए। उन्होंने निश्चय किया चाहे कुछ ही क्यों न हो, इन द्रोहियों को ताली बजाने का अवसर न दूँगा। तुरंत कोमल शब्दों में बोले–बेटा, मैं तुमसे बाहर नहीं हूँ। तुम्हारा जो जी चाहे करो, अब लड़के से अपराध हो गया।

इलाहाबाद का अनुभव–रहित झल्लाया हुआ ग्रेजुएट इस बात को न समझ सका उसे डिबेटिंग–क्लब में अपनी बात पर अड़ने की आदत थी, इन हथकंडों की उसे क्या खबर ? बाप ने जिस मतलब से बात पलटी थी, वह उसकी समझ में न आया। बोला लालबिहारी के साथ अब इस घर में नहीं रह सकता।

बेनीमाधव–बेटा, बुद्धिमान लोग मूर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते। वह बेसमझ लड़का है। उससे जो कुछ भूल हुई, उसे तुम बड़े होकर क्षमा करो।

श्रीकंठ– उसकी इस धृष्टता को मैं कदापि नहीं सह सकता। या तो वही घर में रहेगा, या मैं ही। आपको यदि वह अधिक प्यारा है, तो मुझे विदा कीजिए, मैं अपना भार आप संभाल लूँगा। यदि मुझे रखना चाहते हैं तो उससे कहिए, जहाँ चाहे चला जाए बस यह मेरा अंतिम निश्चय है।

लालबिहारी सिंह दरवाजे की चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाई की बातें सुन रहा था। वह

---

* धुम्रपान कानूनी व स्वास्थ्य की दृष्टि से निषिद्ध तथा हानिकारक है।

उनका बहुत आदर करता था। उसे कभी इतना साहस न हुआ था कि श्रीकंठ के सामने चारपाई पर बैठ जाए, हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप का भी वह इतना मान न करता था। श्रीकंठ का भी उस पर हार्दिक स्नेह था। अपने होश में उन्होंने कभी उसे घुड़का तक न था। जब वह इलाहाबाद से आते, तो उसके लिए कोई–न–कोई वस्तु अवश्य लाते, मुगदर की जोड़ी उन्होंने ही बनवा दी थी। पिछले साल जब उसने अपने से ड्योढ़े जवान को नागपंचमी के दिन दंगल में पछाड़ दिया, तो उन्होंने पुलकित होकर अखाड़े में ही जाकर उसे गले से लगा लिया था, पाँच रुपये के पैसे लुटाए थे। ऐसे भाई के मुँह से आज ऐसी हृदय–विदारक बात सुनकर लालबिहारी को बड़ी ग्लानि हुई। वह फूट–फूटकर रोने लगा। इसमें संदेह नहीं कि अपने किए पर पछता रहा था। भाई के आने से एक दिन पहले से उसकी छाती धड़कती थी कि देखूँ भैया क्या कहते हैं ? मैं उनके सम्मुख कैसे जाऊँगा, उनसे कैसे बोलूँगा, मेरी आँखें उनके सामने कैसे उठेंगी। उसने समझा था कि भैया मुझे बुलाकर समझा देंगे। इस आशा के विपरीत आज उसने उन्हें निर्दयता की मूर्ति बने हुए पाया। वह मूर्त था। परन्तु उसका मन कहता था कि भैया मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। यदि श्रीकंठ उसे अकेले बुलाकर दो–चार बातें कह देते; इतना ही नहीं दो–चार तमाचे भी लगा देते तो कदाचित उसे इतना दुःख न होता; पर भाई का यह कहना कि अब मैं इसकी सूरत नहीं देखना चाहता, लालबिहारी से सहा न गया। वह रोता हुआ घर आया। कोठरी में जाकर कपड़े पहने, आँखें पोंछी, जिससे कोई यह न समझे कि रोता था। तब आनंदी के द्वार पर आकर बोला– भाभी, भैया ने निश्चय किया है कि वह मेरे साथ इस घर में न रहेंगे। अब वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते; इसलिए अब मैं जाता हूँ। उन्हें फिर मुँह न दिखाऊँगा। मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, उसे क्षमा करना।

यह कहते–कहते लालबिहारी का गला भर आया।

जिस समय लालबिहारी सिंह सिर झुकाए आनंदी के द्वार पर खड़ा था, उसी समय श्रीकंठ भी आँखें लाल किए बाहर से आए। भाई को खड़ा देखा, तो घृणा से आँखें फेर लीं, और कतराकर निकल गए। मानो उसकी परछाईं से दूर भागते हों।

आनंदी ने लालबिहारी की शिकायत तो की थी, लेकिन अब मन में पछता रही थी। वह स्वभाव से ही दयावती थी। उसे इसका तनिक भी ध्यान न था कि बात इतनी बढ़ जाएगी। वह मन में अपने पति पर झुँझला रही थी कि यह इतने गरम क्यों होते हैं। उस पर यह भय भी लगा हुआ था कि कहीं मुझसे इलाहाबाद चलने को कहें, तो कैसे क्या करूँगी। इस बीच में जब उसने लालबिहारी को दरवाजे पर खड़े यह कहते सुना कि अब मैं जाता हूँ, मुझसे जो कुछ अपराध हुआ, क्षमा करना, तो उसका रहा–सहा क्रोध भी पानी हो गया। वह रोने लगी। मन का मैल धोने के लिए नयनजल से उपयुक्त और कोई वस्तु नहीं है।

श्रीकंठ को देखकर आनंदी ने कहा–लाला बाहर खड़े बहुत रो रहे हैं।

श्रीकंठ– तो मैं क्या करूँ?

आनंदी – भीतर बुला लो। मेरी जीभ में आग लगे! मैंने कहाँ से झगड़ा उठाया।

श्रीकंठ– मैं न बुलाऊँगा।

आनंदी– पछताओगे। उन्हें बहुत ग्लानि हो गई है, ऐसा न हो, कहीं चल दें।

श्रीकंठ न उठे। इतने में लालबिहारी ने फिर कहा– भाभी, भैया से मेरा प्रणाम कह दो। वह मेरा मुँह नहीं देखना चाहते; इसलिए मैं भी अपना मुँह उन्हें न दिखाऊँगा।

लालबिहारी इतना कहकर लौट पड़ा, और शीघ्रता से दरवाजे की ओर बढ़ा। अंत में आनंदी कमरे से निकली और उसका हाथ पकड़ लिया। लालबिहारी ने पीछे फिरकर देखा और आँखों में आँसू भरे

बोला– मुझे जाने दो।

आनंदी– कहाँ जाते हो ?

लालबिहारी– जहाँ कोई मेरा मुँह न देखे।

आनंदी– मैं न जाने दूँगी।

लालबिहारी– मैं तुम लोगों के साथ रहने योग्य नहीं हूँ।

आनंदी– तुम्हें मेरी सौगंध, अब एक पग भी आगे न बढ़ाना।

लालबिहारी– जब तक मुझे यह न मालूम हो जाए कि भैया का मन मेरी तरफ से साफ हो गया, तब तक मैं इस घर में कदापि न रहूँगा?

आनंदी– मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि तुम्हारी ओर से मेरे मन में तनिक भी मैल नहीं है।

अब श्रीकंठ का हृदय पिघला। उन्होंने बाहर आकर लालबिहारी को गले से लगा लिया। दोनों भाई फूट–फूटकर रोए। लालबिहारी ने सिसकते हुए कहा– भैया, अब कभी मत कहना कि तुम्हारा मुँह न देखूँगा। इसके सिवा आप जो दंड देंगे, मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।

श्रीकंठ ने काँपते हुए स्वर से कहा– लल्लू! इन बातों को बिलकुल भूल जाओ। ईश्वर चाहेगा, तो फिर ऐसा अवसर न आवेगा।

बेनीमाधव सिंह बाहर से आ रहे थे। दोनों भाईयों को गले मिलते देखकर आनंद से पुलकित हो गए। बोल उठे– बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगड़ता हुआ काम बना लेती हैं।

गाँव में जिसने यह वृत्तांत सुना, उसी ने इन शब्दों में आनंदी की उदारता को सराहा– 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं।'

शब्दार्थ–

देवयोग– भाग्य,	क्षुधा–भूख,	भावज– भाभी,
अनर्थ–बुरा,	हठ– जिद,	अविवेक– बुद्धिहीनता,
ताड़ गए– समझ गए,	ग्लानि– पश्चात्ताप,	दंगल– अखाड़ा,
तनिक– थोडा सा,	अवाक्– न बोलने की स्थिति	कांति–शोभा, चमक
नंबरदार– गाँव का मुखिया	ताल्लुकेदार– किसी भू–भाग का जमींदार	

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. भैंस का दो सेर ताजा दूध सवेरे उठकर कौन पी जाता था–
   (क) भूप सिंह (ख) बेनीमाधव सिंह
   (ग) लाल बिहारी सिंह (घ) श्रीकंठ सिंह ( )
2. लालबिहारी फूट–फूट कर रोने लगा था–
   (क) गलती के अहसास से (ख) भाई की बात सुनकर
   (ग) घर से जाने की बात से
   (घ) घर में रहने की बात से ( )
3. ''वह बड़े घर की बेटी है, तो हम भी कोई कुर्मी–कहार नहीं हैं।'' लालबिहारी के इस कथन में

कौनसा मनोभाव व्यक्त हुआ है–

(क) अपनत्व (ख) अहम्

(ग) अकुलाहट (घ) ईर्ष्या ( )

4. ''मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि तुम्हारी ओर से मेरे मन में तनिक भी मैल नहीं।'' यह वाक्य आनंदी के किस भाव को व्यक्त करता है–

(क) स्नेह भाव (ख) एकत्व भाव

(ग) पश्चात्ताप का भाव (घ) क्षमा भाव ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. आनंदी का अपने पति से किस बात पर विरोध था ?
2. श्रीकंठ का गाँव के लोग अधिक सम्मान क्यों करते थे ?
3. ''मैके में चाहे घी की नदी बहती हो।'' लाल बिहारी के इस कथन के उत्तर में आनंदी ने क्या कहा था ?
4. आजकल की स्त्रियों की किस मनोवृत्ति की ओर कहानीकार ने संकेत किया है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'बड़े घर की बेटी' कहानी का उद्देश्य बताइये।
2. 'उद्विग्नता के कारण पलक तक नहीं झपकी' यह उद्विग्नता किसको, किस बात से हुई थी ?
3. आनंदी अन्य स्त्रियों की तरह अपने पति के किस विचार से सहमत नहीं थी? इसके संबंध में उसकी क्या धारणा थी ?
4. लालबिहारी के प्रति स्नेह रखते हुए भी श्रीकंठ क्रोधित क्यों हो उठा था ?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. 'बड़े घर की बेटी' शीर्षक कहानी के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए।
2. आपकी दृष्टि में इस पाठ में कौन सी बात सबसे गलत हुई ? इस बात की चर्चा करते हुए अपने विचार लिखें कि आप उस बात को बुरी क्यों मानते हैं ? विस्तृत विवेचन कीजिए।
3. ''घर की छोटी–छोटी बातें सदस्यों के अहम् के कारण उसके विघटन का कारण बन सकती है।'' बड़े घर की बेटी कहानी के आधार पर इस कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

*****